REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
प्रत्यय
LIVE
05-02-2025 03:00 PM

प्रत्यय (भाषा प्रथम व भाषा द्वितीय दोनों के लिए)

प्रत्यय :-

धातु अथवा प्रातिपदिक के बाद जिसका प्रयोग किया जाता है, वह प्रत्यय कहलाता है। अथवा किसी सूत्र के द्वारा जिसका विधान (रचना) होता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय के सहयोग से धातु का या शब्द का एक निश्चियार्थक भाव प्रकट होता है।

प्रत्यय तीन प्रकार का होता है-

(1) कृत् (कृदन्त) (2) तद्धित (3) स्त्री प्रत्यय

धातु शब्द शब्द

कृदन्त प्रत्यय :-

जिन प्रत्ययों का प्रयोग धातु के बाद किया जाता है, उन्हें कृदन्त प्रत्यय कहते हैं। कृदन्त दो प्रकार का होता है।

कृत् प्रत्यय : कृत् का अर्थ है- 'करोति इति कृत्' अर्थात् करने वाला। कृत् प्रत्ययों का प्रयोग कर्तृवाच्य से होता है।

जैसे- कृ + ण्वुल् - कृ + वु - कार्+ वु - कार् + अक: = कारक: –

कृत्य प्रत्यय : कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है।

जैसे- गम् + तव्यत् - गन् + तव्य = गन्तव्य

तद्धित प्रत्यय :-

जिन प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के बाद किया जाता है।

जैसे- लघु + तमप् - लघु + तम = लघुतम

स्त्री प्रत्यय :-

जिन प्रत्ययों का प्रयोग पुंल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग में परिवर्तन के लिए किया जाता है, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

जैसे- अज + टाप् - अज + आ = अजा

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय में त शेष रहता है। क् की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत् संज्ञा व लोप होता है। इसका अर्थ भूतकाल में होता है। इसका प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। इसका रूप राम, रमा और फल के समान चलता है या जिसके लिए प्रयोग होगा उसी के अनुसार चलता है।

- क्त और क्तवतु की निष्ठा संज्ञा होती है। निष्ठा का अर्थ समाप्ति होता है। कृत् का अर्थ करने वाला होता है। भूतकाल में कृत् प्रत्यय दो प्रकार का होता है। कृत्य और कृत्।

- कृत् प्रत्यय का मुख्यतया कर्तृवाच्य में प्रयोग होता है।
- कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग धातुओं से भाव और कर्म में होता है।
- कृत्य प्रत्यय सात प्रकार के होते हैं। तव्यत्, तव्य, अनीयर्, केलियमर्, यत्, क्यप्, ण्यत्

क्यप्, ण्यत्

सूत्र :

क्तक्तवतूनिष्ठा - क्त और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

(1) **नियम :** जिस धातु के अन्त में म् और न् हो तो उसका लोप कर देते हैं- क्त

धातु प्रत्यय	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
गम् + क्त	गतः	गता	गतम्
हन् + क्त	हतः	हता	हतम्
नम् + क्त	नतः	नता	नतम्
मन् + क्त	मतः	मता	मतम्
यम् + क्त	यतः	यता	यतम्

लेकिन निम्न शब्दों में यह नियम लागू नहीं होगा।

जैसे- शम् + क्त = शान्त:)

जन् + क्त = जात:

खन् + क्त = खात:

(2) नियम : आ, इ, उ, ऋ में सीधे त जुड़ता है-

कृ + क्त = कृतः, कृता, कृतम्

नी + क्त = नीतः

क्री + क्त = क्रीतः

चि + क्त = चितः

ज्ञा + क्त = ज्ञातः

भू + क्त = भूतः

पा + क्त = पीतः (पीया)

पा + क्त = पातः (रक्षा किया)

जैसे- बालकेन जलं पीतम्। (पा + क्त) (बालक ने जल पीया)

पित्रा बालकः पातः। (पा + क्त) (पिता ने बालक की रक्षा की)

स्मृ + क्त = स्मृतः

घृ + क्त = घृतः

भी + क्त = भीतः

श्रु + क्त = श्रुतः

श्रि + क्त = श्रितः

यहाँ निम्न शब्दों में यह नियम नहीं लगेगा।

घ्रा + क्त = घ्राण:, घ्रात:

ग्लै + क्त = ग्लान:

स्था + क्त = स्थित:

नियम 3 : रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः

जिस धातु के अन्त में द् हो और उसके बाद में निष्ठा त हो, तो द् और त् दोनों के स्थान पर न् होता है।

द् + त् = न्

छिद् + क्त = छिन्नः

भिद् + क्त = भिन्नः

प्र+ सद् + क्त = प्रसन्नः

नियम 4 : जिस धातु के शुरू में यण् प्रत्याहार का वर्ण हो तो इसके स्थान पर इक् का आदेश हो जाता है।

वस् + क्त = उस् + क्त = उषित: (इट् का आगम)

ब्रु/वच् + क्त उच् + क्त = उक्त:

वद् + क्त = उद् + क्त = उदित (इट् का आगम)

वह + क्त = उह + क्त = ऊढ:

नियम- इन धातुओं में 'इट्' का आगम होता है। इट् में इ शेष रहता है।

पठ् + क्त = पठित:

पूज् + क्त = पूजित:

कथ् + क्त = कथित:

कथ् धातु के समान चलने वाली धातुओं में क्त प्रत्यय इसी तरह जुड़ता है।

दण्ड + क्त = दण्डित:

क्षल् + क्त = क्षालित:

कुप् + क्त = कुपित:

चुर् + क्त = चोरित:

रच् + क्त = रचित:

शिक्ष + क्त = शिक्षित:

शुभ् + क्त = शोभित:

अधि + इ + क्त अधीत:

रक्ष + क्त = रक्षित:

ज्वल् + + क्त = ज्वलित:

पाल् + क्त = पालित:

कम्प् + क्त = कम्पित:

गृह + क्त = गृहीत:

क्त + याच् + = याचित:

खाद + क्त = खादित:

शीङ् + क्त = शयित:

हस् + क्त = हसित:

अर्च् + क्त = अर्चित:

क्रन्द् + क्त = क्रन्दित:

क्षुध् + क्त = क्षुधित:

अन्य धातुओं में सीधे जुड़ता है।

आप् + क्त = आप्तः

शक् + क्त = शक्तः

नशु + क्त = नष्टः कि

दुस् + क्त = दुष्टः

लभ् + क्त = लब्ध

शास् + क्त = शिष्टः

व्यज् + क्त = व्यक्तः

रुध् + क्त = रुद्धः

इष् + क्त = इच्छितः

चित् + क्त = चिन्तः

शॄ + क्त = शीर्णः

कॄ + क्त = कीर्णः

द्रा + क्त = द्राणः

शुष् + क्त = शुष्कः

पच् + क्त = पक्वः

दृह् + क्त = दृढ:

चित् + क्त = चिन्त:

नह् + क्त = नद्ध:

स्पश् + क्त = स्पष्ट:

धृष् + क्त = धृष्ट:

दुह् + क्त = दुग्ध

दह् + क्त = दग्ध (जला हुआ)

अद् + क्त = जग्ध:

अधि+स्था+क्त = अधिष्ठित:

कम् + क्त = कान्त:

कृष् + क्त = कृष्ट:

क्षिप् + क्त = क्षिप्त:

आ + रभ् + क्त = आरब्ध:

दा + क्त = दत्त:

धा + क्त = हित:

तृप् + क्त = तृप्त:

लुञ् + क्त = लूनः

जु + क्त = जीर्णः

ह्वे + क्त = हूतः

भुज् + क्त = भुग्नः

क्षै + क्त = क्षामः

उप्+विश्+क्त = उपविष्टः

आ + रुह + क्त = आरूढ़ :

अव + तृ + क्त = अवतीर्ण

श्लिष् + क्त = श्लिष्टः

क्षुध् + क्त = क्षुधितः

सृज् + क्त = सृष्टः

बन्ध् + क्त = बद्धः

भ्रस्ज् + क्त = भ्रष्टः

ध्यै + क्त = ध्यातः

दम् + क्त = दान्तः

रुष् + क्त = रुष्टः

धाव् + क्त = धावित:

दी + क्त = दीत:

श्रि + क्त = श्रित:

गुह + क्त = गूढ:

स्तु + क्त = स्तुत:

मृज् + क्त = मृष्ट:

स्नान + क्त = स्नात:

मुह + क्त = मुग्ध:

स्वप् + क्त = सुप्तः

उद्+श्वि + क्त = उच्छूनः

हन् + क्त = हतः

नपुंसके भावे क्तः

नुपंसकलिंग में भाव अर्थ में धातु से क्त प्रत्यय होता है।

जैसे- हस् + क्त = हसितम्

क्तवतु प्रत्यय

भूतकाल — वान् वती वत्

- इसमें तवत् शेष रहता है। पठ्+क्तवतु पठितवान् पठितवती पठितवत्
- इसका प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है। ज्ञा ज्ञातवान् ज्ञातवती ज्ञातवत्
- क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल अर्थ में होता है।
- इसके रूप भवत्, नदी और जगत् के समान चलते हैं।

पठ् पठितवान् पठितवती पठितवत्

बालकः गतवान्

बालिका गतवती

वाहनम् गतवत्

गम् + क्तवतु + भूतकाल

शानच् प्रत्यय में आन, मान पूरा आता है लेकिन क्तवतु में हलन्त आता

नियम : क्त प्रत्यय से बने रूप में वत् जोड़ देते हैं।

पठ् + क्त = पठित् + वत् पठितवत् पठितवान्

गम् + क्तवतु = गतवत् = गतवान्

दृश् + क्तवतु = दृष्टवत् = दृष्टवान्

कथ् + क्तवतु कथितवत् कथितवान्

पा + क्तवतु = पीतवत् = पीतवान्

हन् + क्तवतु = हतवत् = हतवान्

पूज् + क्तवतु = पूजितवत् = पूजितवान्

वस् + क्तवतु = उषितवत् = उषितवान्

वच्/ब्रु + क्तवतु उक्तवत् उक्तवान्

जि + क्तवतु = जितवत् = जितवान्

कथ् + क्तवतु = कथितवत् = कथितवान्

रच् + क्तवतु = रचितवत् = रचितवान्

नोर्ट : गमनार्थक धातु में क्त प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में भी होता है।

• अकर्मक धातु में यदि क्त प्रत्यय जुड़ता है तो उसका भी प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है।

• शीङ्:, स्था, आस्, वस्, जन्, रुह, हन्, इन धातुओं में जब क्त प्रत्यय जुड़ता है तो इसका प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है।

• क्त प्रत्यय के योग में कर्मवाच्य और भाववाच्य का प्रयोग होता है।

क्तवतु प्रत्यय के योग में कर्तृवाच्य का प्रयोग होता है।

जैसे छात्रः गृहं अधिष्ठितः ।

हरिः वैकुष्ठम् अधिष्ठितः । (कर्तृवाच्य)

हरिणा वैकुण्ठः अधिष्ठितः। (कर्मवाच्य)

क्तः रामनवमीम् उपोषितः। (कर्तृवाच्य वस् + क्त)

भक्तेन रामनवमी उपोषिता। (कर्मवाच्य वस् + क्त)

ण्वुल्

ण्वुल तृचौ : (ण्वुल् और तृच् प्रत्यय विधिसूत्र) धातु से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होता है।

जैसे-

कृ + ण्वुल्	कार् अक	कारक:
कृ + तृच्	कर्तृ	कर्ता

कर्ता

कृ + ण्वुल् (अक) = कारक

कृ + तृच् (तृ) = कर्तृ कर्ता

ण्वुल् → अक

तृच् → तृ

युवोरनाकौ : युवोः अन अकः

अर्थ :- यु और वु को क्रमशः अन और अक का आदेश होता है। अर्थात् यु के स्थान पर 'अन' का और वु के स्थान पर 'अक' का आदेश होता है। कर्ता अथवा वाला अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है।

नियम : 1

ण्वुल् प्रत्यय जोड़ने के लिए धातु के अन्तिम स्वर की वृद्धि कर दी जाती है, अयादि आदेश हो जाता है।

जैसे- कृ + ण्वुल्

ऋ = आर् (अचोञ्णिति सूत्र से ऋ = आर् आदेश)

क् + आर् + अक (युवोरनाकौ से वु अक आदेश)

कारक : (मूल शब्द पुल्लिंग होता है।)

नी + ण्वुल्

ई = ऐ

न् + आय् + अकः

नायकः

नियम : 2

आकारान्त धातुओं के बीच में 'य' जोड़ दिया जाता है।

दा + ण्वुल् = दायकः

धा + ण्वुल् = धायकः

ध्यै (ध्या) + ण्वुल् = ध्यायकः

स्ना + ण्वुल् = स्नायक:

गै (गा) + ण्वुल् = गायक:

नियम : 3: उपधा में अ के स्थान पर आ, इ = ए का, उ = ओ का तथा ऋ = अर् गुण का आदेश हो जाता है।

पठ् + ण्वुल् = पाठक:

ग्रह + ण्वुल् = ग्राहक:

दृश् + ण्वुल् = दर्शक:

स्वद् + ण्वुल् = स्वादक:

कृष् + ण्वुल् = कर्षक:

नश् + ण्वुल् = नाशक:

वच् + ण्वुल् = वाचक:

पच् + ण्वुल् = पाचक:

वह् + ण्वुल् = वाहक:

नृत् + ण्वुल् = नर्तक:

मुद् + ण्वुल् = मोदक:

लिख् + ण्वुल् = लेखक:

शुष् + ण्वुल् = शोषक

पुष् + ण्वुल् = पोषक:

रुच् + ण्वुल् = रोचकः

नट् + ण्वुल् = नाटकः

नियम : 4: कथ् के समान चलने वाली धातुओं में सीधे अक जोड़ देते हैं।

कथ् + ण्वुल् = कथकः

पूज् + ण्वुल् = पूजकः

चिन्त् + ण्वुल् = चिन्तकः

नियम : 5: निम्न धातुओं में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

धाव् + ण्वुल् = धावकः

गम् + ण्वुल् = गमकः

रक्ष + ण्वुल् = रक्षकः

भिक्ष + ण्वुल् = भिक्षकः

क्रीड् + ण्वुल् = क्रीडकः

नट् + ण्वुल् = नाटकः

शास् + ण्वुल् = शासक:

जन् + ण्वुल् = जनक:

शिक्ष + ण्वुल् = शिक्षक:

दीप् + ण्वुल् = दीपक:

अधि+आप्+ण्वुल्-अध्यापक:

अक:

ण्वुल्

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

(4) तृच् प्रत्यय : तृ शेष

धातु से कर्ता में या वाला अर्थ में तृच् और ण्वुल् प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसका रूप तीनों लिंगों में चलता है।

पितृ (पुंल्लिंग में) नदी (स्त्रीलिंग) वारि (नपुंसकलिंग):

(1) नियम : इ, उ, ऋकारान्त धातुओं को गुणादेश हो जाता है। कृ + तृच्

ऋ = अर्क् + अर् + तृ= कर्तृ = कर्ता

इ = ए

उ = ओ

ऋ = अर्

कर्तृ = कर्तृ = कर्ता

जि + तृच् = जेतृ = जेता

श्रु + तृच् = श्रोतृ = श्रोता

धातु	प्रत्यय	शब्द	पुल्लिंग
श्रु	+ तृच्	श्रोतृ	श्रोता
नी	+ तृच्	नेतृ	नेता
भृ	+ तृच्	भर्तृ	भर्ता
जि	+ तृच्	जेतृ	जेता
क्री	+ तृच्	क्रेतृ	क्रेता
हृ	+ तृच्	हर्तृ	हर्ता

~~धृ~~ स्तु	+ तृच्	स्तोतृ	स्तोता
~~स्तु~~ भी	+ तृच्	भेतृ	भेता
~~भी~~ धृ	+ तृच्	धर्तृ	धर्त्ता

(2) नियम : आकारान्त धातु से सीधे तृ जुड़ जाता है।

दा + तृच् दातृ दाता

पा + तृच् पातृ पाता

ज्ञा + तृच् ज्ञातृ ज्ञाता

(3) नियमः म् का न् हो जाता है लेकिन न् में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

गम् + तृच् गन्तृ गन्ता

नम् + तृच् नन्तृ नन्ता

हन् + तृच् हन्तृ हन्ता

(4) नियम : कथ् जैसी धातुओं में य् में इ जोड़ देते हैं।

कथ्	+	तृच्	कथयितृ	कथयिता
पूज्	+	तृच्	पूजयितृ	पूजयिता
चुर	+	तृच्	चोरयितृ	चोरयिता
चिन्त्	+	तृच्	चिन्तयितृ	चिन्तयिता

(5) नियम : यदि उपधा में ऋ हो तो ऋ र् हो जाता है, और इ = ए, उ = ओ कर देते हैं।

सृज्	+ तृच्	सृष्ट्	स्रष्टा
स्पृश्	+ तृच्	स्पृष्ट	स्प्रष्टा
दुह	+ तृच्	दोग्धृ	दोग्धा
भिद्	+ तृच्	भेतृ	भेत्ता
युध्	+ तृच्	योद्धृ	योद्धा
भुज्	+ तृच्	भोक्तृ	भोक्ता
वह	+ तृच्	वोढृ	वोढा
सह	+ तृच्	सोढृ	सोढा

पू	+ तृच्	पवितृ	पविता
स्तु	+ तृच्	स्तोतृ	स्तोता
शी	+ तृच्	शयितृ	शयिता
वृध्	+ तृच्	वर्धितृ	वर्धिता
चुर्	+ तृच्	चोरयितृ	चोरयिता
क्री	+ तृच्	क्रेतृ	क्रेता
जन्	+ तृच्	जनितृ	जनिता
हस्	+ तृच्	हसितृ	हसिता

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

रुद्	+ तृच्	रुदितृ	रुदिता
भ्रम्	+ तृच्	भ्रमितृ	भ्रमिता
स्था	+ तृच्	स्थातृ	स्थाता
वद्	+ तृच्	वदितृ	वदिता
ग्रह	+ तृच्	ग्रहीतृ	ग्रहीता

REET 2025 L - 1
TIME TABLE
REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
MATHS
L-1 07AM
GEOGRAPHY
L-2 10 AM
हिंदी
L-1&2 11 AM
CDP
L-1&2 02 PM
ENGLISH
L-1&2 03 PM
संस्कृत
L-1&2 03 PM
EVS
L-1 04 PM
PHYSICS
L-2 04 PM
MATHS
L-2 05 PM
POLITY
L-2 07 PM
CHEM+ BIO
L-2 07 PM
HISTORY
L-2 08 PM
Registration Starts from
23rd DEC
Classes Start from
26th DEC
JOIN US ON
DOWNLOAD THE RWA APP NOW
Google Play

घञ् प्रत्यय: अ शेष

(1) सूत्र : भावे :

भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय होता है। धातु का अर्थ दो प्रकार का होता है। साध्यावस्थापन्न तथा सिद्धाव स्थापन्न।

साध्यता में तिङ्प्रत्यय लगाते हैं जबकि सिद्धता में घञ् प्रत्यय लगता है। इस तरह घञ् का प्रयोग भाव अर्थ में होता है। इससे बना शब्द पुंल्लिंग होता है। धातु का अर्थ बतलाने के लिए तथा कर्ता को छोड़कर अन्य कारक का अर्थ बतलाने के लिए घञ् प्रत्यय लगता है। उपसर्ग के साथ इसका प्रयोग प्रचलित है।

(2) अवे तॄस्त्रोः घञ्ः (घञ् प्रत्यय विधि सूत्र)

अर्थ :- अव उपसर्ग पूर्वक तॄ और स्तॄ धातुओं के साथ घञ् प्रत्यय होता है। जैसे-

- अव + तॄ + घञ्

अव + तार् + अ = अवतारः

- अव + स्तॄ + घञ्

अव + स्तार् + अ अवस्तारः

अव + तॄ / स्तॄ + घञ्

(3) हलश्च (घञ् प्रत्यय विधि सूत्र)

अर्थ :- हलन्त धातु के साथ घञ् प्रत्यय लगता है।

रम् + घञ् = रामः

पठ् + घञ् = पाठः

अ

1. नियम :

धातु के अन्तिम इ, उ, ऋ को वृद्धि कर दिया जाता है और अयादि आदेश होता है।

चि + घञ्

इ =ऐ, ऐ आय्

च् + आय् + अ

चाय:

चै + अ

चाय:

कृ+ घञ्

ऋ = आर्

क् + आर् + अः

कारः

प्र + स्तु घञ् = प्रस्तावः

वि+ कृ + घञ् विकारः

प्र + हृ + घञ् = प्रहारः

उप + कृ + घञ् = उपकारः

सम् + कृ + घञ् = संस्कारः

अव + तृ + घञ् = अवतारः

नि + चि + घञ्

क्

चै

निकायः

निकाय:

श्रु + घञ्

उ = औ, औ = आव्

श्र + आव् + अ = श्राव: (सुनना)

प्र + कृ + घञ् = प्रकार:

प्र + भू + घञ् = प्रभाव:

प्र + स्तु + घञ् = प्रस्ताव:

भू + घञ् = भावः

2. नियम : जिस धातु की उपधा में अ हो तो अ आ, इ ए, उ = ओ, ऋ = अर् गुण आदेश हो जाता है।

पठ् + घञ् = पाठः

वि + वह + घञ् = विवाहः

आ + चर् घञ् आचारः

प्र + कृष् + घञ् = प्रकर्षः

चल् + घञ् = चालः

जप् + घञ् = जापः

प्र + सद् + घञ् = प्रसादः

हस् + घञ् = हासः

वि + लप् + घञ् = विलापः

अभि + लष् + घञ् = अभिलाषः

ग्रह + घञ् = ग्राहः

तप् + घञ् = तापः

प्र + विश्+घञ् = प्रवेशः

शप् + घञ् = शापः

वृष् + घञ् = वर्षः

उप + दिश् + घञ् = उपदेशः

लिख् + घञ् = लेखः

आ + दृश् घञ् आदर्शः

उद् + सह् + घञ् = उत्साहः

कुप् घञ् कोपः

चुर् + घञ् = चोरः

द्रुह + घञ् = द्रोहः

वि + कस् + घञ् = विकासः

पुष् + घञ् = पोषः

श्लिष् + घंञ् = श्लेषः

• सम् + तन् घञ् = सन्तान

अधि + इ + घञ् अध्यायः

स्निह् + घञ् = स्नेहः

अव् + रुध् = अवरोधः

आ + हन् घञ् आघातः

वि+ नश्+ घञ् = विनाशः

ग्रस् + घञ् = ग्रासः

दह + घञ् = दाहः

प्र + नम् + घञ् = प्रणामः

मुद् + घञ् = मोदः

बुध् + घञ् = बोधः

वि + लप् + घञ् = विलापः

स्पर्श + घञ् = स्पर्शः

आ + रुह + घञ् = आरोहः

उप + अधि + इ + घञ् ऐ आय् उपाध्याय:

आ + वृत् + घञ् = आवर्त:

आ + मुद् + ञ् = आमोद:

आ + रुह् + घञ् = आरोह:

प्र + सृ + घञ् = प्रसार:

प्र + काश् + घञ् = प्रकाश:

नि + वस् + घञ् = निवास:

क्षुभ् + घञ् = क्षोभः

लभ् + घञ् = लाभः

3. नियम : आकारान्त धातुओं में सीधे बीच में य् जुड़ जाता है।

दा + घञ् = दायः

स्था + घञ् = स्थायः

धा + घञ् = धायः

सूत्र "चजोः कु घिण्ण्यतोः"

च और ज के स्थान पर क वर्ग का आदेश होता है जहाँ घ् की इत संज्ञा होती है और ण्यत् प्रत्यय लगा हुआ हो।

पच् + घञ् = पाकः

भुज् + घञ् = भोगः

सिच् + घञ् = सेकः

रुज् + घञ् = रोगः

मृज् + घञ् = मार्गः

विसृज + घञ् = विसर्गः

त्यज् + घञ्= त्यागः

शुच् + घञ् = शोकः

भज् + घञ् = भागः

युज् + घञ् = योगः

नि + चि घञ् = निकायः

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

4 . नियम : जिस धातु के अन्त में म् हो उसकी उपधा की वृद्धि नहीं होती।

शम् + घञ् = शमः

गम् + घञ् = गमः

वि + श्रम् + घञ् = विश्रमः

दम् + घञ् = दमः

यम् + घञ् = यमः

नम् + घञ् = नमः

5. नियम : रम्, वम्, कम्, आचम् इन धातुओं में वृद्धि आदेश होता है।

रम् + घञ् = रामः

वम् + घञ् = वामः

कम् + घञ् = कामः

आचम् + घञ् = आचामः

(6) शतृ प्रत्यय

शतृ और शानच् (वर्तमानकाल)

शतृ प्रत्ययः- श्अन्, अन्ती, अत्

शतृ में अत् शेष होता है। वर्तमान काल की क्रिया में 'हुआ' जोड़कर अर्थ निकलता है। जैसे- पढ़ता हुआ। जाता हुआ।

- 'श्' की "लशक्वतद्धिते" से और 'ऋ' की "उपदेशेऽजनुनासिक इत्" से इत् संज्ञा होती है।
- इसका रूप भवत्, नदी और जगत् जैसा चलता है।

- शतृ प्रत्यय का प्रयोग परस्मैपदी धातु में होता है। इससे बना शब्द विशेषण होता है।

लटः शतृ शानचावप्रथमा समानाधिकरणेः

- अप्रथमान्त के साथ समानाधिकरण होने पर वर्तमान काल में लट् लकार के स्थान पर धातु से शतृ और शानच् प्रत्यय होते हैं।
- तौ सतः
- शतृ और शानच् की सत् संज्ञा होती है।

शतृ प्रत्यय बनाने के नियम :

- वर्तमान काल प्रथम पुरुष की क्रिया में अन्तिम इ को हटा देने पर शतृ का रूप बनता है।

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

धातु	प्रत्यय	शब्द	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ्	+ शतृ	पठत्	पठन्	पठन्ती	पठत्
अस्	+ शतृ	सत्	सन्	सती	सत्
लिख	+ शतृ	लिखत्	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
पच्	+ शतृ	पचत्	पचन्	पचन्ती	पचत्
दृश्	+ शतृ	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
गम्	+ शतृ	गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

धातु	प्रत्यय	शब्द	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
भू	+ शतृ	भवत्	भवन्	भवन्ती	भवत्
मिल्	+ शतृ	मिलत्	मिलन्	मिलन्ती	मिलत्
नी	+ शतृ	नयत्	नयन्	नयन्ती	नयत्
गण्	+ शतृ	गणयत्	गणयन्	गणयन्ती	गणयत्
चिन्त्	+ शतृ	चिन्तयत्	चिन्तयन्	चिन्तयन्ती	चिन्तयत्
घ्रा	+ शतृ	जिघ्रत्	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती	जिघ्रत्
दा	+ शतृ	यच्छत्	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्

धातु	प्रत्यय	शब्द	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पा	+ शतृ	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

निम्न धातुओं में शतृ प्रत्यय जोड़ने पर स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में रूप इसी तरह चलते हैं।

धातु		प्रत्यय	शब्द	पुंल्लिंग
प्रच्छ्	+	शतृ +	पृच्छत्	पृच्छन्
इष्	+	शतृ	इच्छत्	इच्छन्
कुप्	+	शतृ	कुप्यत्	कुप्यन्
कृष्	+	शतृ	कर्षत्	कर्षन्
क्रन्द्	+	शतृ	क्रन्दत्	क्रन्दन्
क्रुध्	+	शतृ	क्रुध्यत्	क्रुध्यन्
खन्	+	शतृ	खनत्	खनन्

गर्ज	+	शतृ	गर्जत्	गर्जन्
गै	+	शतृ	गायत्	गायन्
चल्	+	शतृ	चलत्	चलन्
छिद्	+	शतृ	छिदत्	छिदन्
जि	+	शतृ	जयत्	जयन्
त्यज्	+	शतृ	त्यजत्	त्यजन्
दुह	+	शतृ	दुहत्	दुहन्
धाव्	+	शतृ	धावत्।	धावन्
पत्	+	शतृ	पतत्	पतन् !
पूज्	+	शतृ	पूजयत्	पूजयन्

भक्ष	+	शतृ	भक्षयत्	भक्षयन्
भ्रम्	+	शतृ	भ्रमत्	भ्रमन्
रक्ष	+	शतृ	रक्षत्	रक्षन्
वद्	+	शतृ	वदत्	वदन्
श्रु	+	शतृ	शृण्वत्	शृण्वन्
स्था	+	शतृ	तिष्ठत्	तिष्ठन्
हन्	+	शतृ	हनत्	हनन्
हस्	+	शतृ	हसत्	हसन्
पाल्	+	शतृ	पालयत्	पालयन्
तृ	+	शतृ	तरत्	तरन्

जीव्	+ शतृ	जीवत्	जीवन्
पीड्	+ शतृ	पीडयत्	पीडयन्
धृ	+ शतृ	धरत्	धरन्

स्त्रीलिंग बनाने का नियम :

(1) स्त्रीलिंग का रूप बनाने के लिए वर्तमान काल के प्रथम पु. के बहुवचन के रूप मे 'ई' कर देते है। पठन्तिपठन्ती (शतृ प्रत्यय)

पठन्तीपठन्त्यौ

पठन्त्यः

(2) ति से पहले यदि अ हो तो बीच में न् जोड़ दिया जाता है और अंतिम इ को दीर्घ कर दिया जाता है।

पठ + ति   पठ् + न् + ती   पठन्ती

पूज् पूजयति   पूजयन्ती

रुद् + शतृ   = रोदिती

अदादिगण में, स्वादिगण, जुहोत्यादिगण, क्रयादिगण में बीच में न् का आगम नहीं होता है। तुदती, चिन्वती, शृण्वती, ददती, क्रीणती, तन्वती

(7) शानच् प्रत्यय

मान: माना मानम्

इसका आन शेष होता है इसका प्रयोग शतृ जैसा होता है। इसका प्रयोग आत्मनेपदी में होता है। इसका रूप तीनों लिङ्गों में चलता है।

जैसे- राम रमा फल

- शानच् प्रत्यय का प्रयोग हुआ, हुए, हुई आदि अर्थ में क्रिया की निरन्तरता बतलाने के लिए किया जाता है।
- शानच् प्रत्यय का प्रयोग वर्तमान काल के अर्थ में होता है।

आने मुक् :

अदन्त अंग को मुक् का आगम होता है। मुक् में (म्) शेष होता है। अंग - शुरू में अदन्त-जिस धातु के शुरू में अ हो।

- पच् + म् + शानच्

पच् + अ + म् + शानच्

पचमान

- धातु के अन्त में अ जोड़ देते हैं।

शानच् प्रत्यय जोड़ने के नियम-

• प्रथम पु. के एकवचन में ते को हटाकर मान जोड़ देते हैं।

पच् - पचते - पच + मान = पचमानः

पचमानं पचमानः

लभ्- लभते - लभ + मान = लभमानः

सेव्- सेवते - सेव + मान = सेवमानः

आ+रभ् - आरभमाणः

- शानच् में न् का ण् हो जाता है लेकिन शतृ में न् का ण् नहीं होता है।

लम्ब + शानच् = लम्बमानः

ईक्ष् + शानच् = ईक्षमाणः

त्वर् + शानच् = त्वरमाणः

वृत् + शानच् = वर्तमानः

• चुटु तुल श व्यवायेन :

यदि ऋ, र्, ष् के बाद में चवर्ग टवर्ग, तवर्ग ल, श् हो तो न् के स्थान पर ण् का आदेश नहीं होता है, और अन्य जगह होता है।

दय् + शानच् दयमान:

भास् + शानच् = भासमान: (चमकना)

शिक्ष + शानच् = शिक्षमाण:

रुच् + शानच् = रोचमान:

वि + राज् + शानच् = विराजमान:

याच् + शानच् = याचमानः

मुद् + शानच् = मोदमानः

कथ् + शानच् = कथयमानः

• ईदासः

(ईत् + आसः)

आस् धातु के बाद में यदि शानच् प्रत्यय हो, तो आन के स्थान पर 'ईन' का आदेश हो जाता है।

आस् + शानच् = आस् + आन् ।

आस् + ईनः = आसीनः

शङ्क् + शानच् = शंकमानः

ब्रू + शानच् = बूवाणः

शी + शानच् = शयान:

दा + शानच् = ददान:

कम्प् + शानच् कम्पमान:

कूर्द् + शानच् = कूर्दमान:

जन् + शानच् = जायमान:

भास्+ शानच्= भासमान:

याच् + शानच् = याचमान:

वृध् + शानच् = वर्धमान:

ज्ञा + शानच् = जानान:

मुच् + शानच् = मुञ्चमान:

चि + शानच्= चिन्वान:

रच् + शानच्= रचयमान:

पीड् + शानच् = पीड्यमान:

चिन्त् + शानच् = चिन्त्यमान:

शुच् + शानच्= शोचमान:

शुभ् + शानच् = शोभमान:

मृ + शानच् = म्रियमाणः

शतृ और शानच् प्रत्यय का प्रयोग करते समय विशेषण के समान इनका प्रयोग किया जाता है। अर्थात् जिसके लिए प्रयोग होगा उसी के अनुसार विभक्ति लिंग और वचन होगा। वह पढ़ता हुआ जा रहा है। सः पठन् गच्छति (शतृ प्रत्यय) पढ़ते हुए बालक को देखो। पठन्तम् बालकं पश्य ।

.... बालकं पश्य । (आस् + शानच्)

(8) ल्युट् प्रत्यय

- ल्युट् प्रत्यय में 'यु' शेष रहता है 'ल्' की 'लशक्वतद्धिते' और 'ट्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत् संज्ञा होती है। 'यु' के स्थान. पर.' अन' का आदेश होता है।
- इसका प्रयोग भाववाच्य में होता है। इससे बना शब्द नपुंसकलिंग का होता है। इसका रूप फल के समान चलता है।

(1) नियम : आकारांत धातुओं में सीधे 'अनम्' जोड़ दिया जाता है, यहाँ दीर्घ सन्धि होती है।

दा + अनम् =

पा + अनम् = पानम्

आ + अ = दानम्

घ्रा + ल्युट् = घ्राणम्

(2) नियम : ए और ऐ के स्थान पर आ का आदेश होता है।

गै - गा + ल्युट् = गानम्

ध्यै - ध्या + ल्युट् = ध्यानम्

(3) नियम : धातु के अन्त में इ, उ, ऋ अथवा उपधा में ये तीनों लगे हो तो इनके स्थान पर गुण का आदेश हो जाता है और कुछ शब्दों में अयादि आदेश होता है।

नी + ल्युट्

ई + ए = अय्याह

न् + अय् + अनम् = नयनम्

जि ल्युट् जयनम्

कृ + ल्युट् = करणम्

शी + ल्युट् = शयनम्

कृष् + ल्युट् = कर्षणम्

इण् + ल्युट् = अयनम्

हृ + ल्युट् = हरणम्

स्मृ + ल्युट् = स्मरणम्

छिद् + ल्युट् = छेदनम्

क्रुध् + ल्युट् = क्रोधनम्

आ + रुह् = आरोहणम्

बुध् + ल्युट् = बोधनम्

मुद् + ल्युट् = मोदनम्

भू + ल्युट् = भवनम्

दृश् + ल्युट् = दर्शनम्

लिख् + ल्युट् = लेखनम्

चि + ल्युट् = चयनम्

वृत् + ल्युट् = वर्तनम्

भिद् + ल्युट् = भेदनम्

वृध् + ल्युट् = वर्धनम्

तृप् + ल्युट् = तर्पणम्

नि + विद् + ल्युट् = निवेदनम्

मिल् + ल्युट् = मेलनम्

अनु + इष् + ल्युट् = अन्वेषणम्

(4) नियम : निम्न धातुओं में गुण आदेश नहीं होता है।

ईक्ष् + ल्युट् = ईक्षणम्

जीव् + ल्युट् = जीवनम्

कूर्द् + ल्युट् = कूर्दनम्

निन्द् + ल्युट् = निन्दनम्

चिन्त् + ल्युट् = चिन्तनम्

क्रीड् + ल्युट् = क्रीडनम्

5) नियम : निम्न धातुओं में सीधे अनम् जुड़ता है।

पठ् + ल्युट् = पठनम्

चल् + ल्युट् = चलनम्

गम् + ल्युट् = गमनम्

पच् + ल्युट् = पचनम्

हस् + ल्युट् = हसनम्

शास् + ल्युट् = शासनम्

वद् + ल्युट् = वदनम्

पूज् + ल्युट् = पूजनम्

वस् + ल्युट् = वसनम्

अर्च + ल्युट् = अर्चनम्

आ+क्रम्+ल्युट् = आक्रमणम्

वच् + ल्युट् = वचनम्

दण्ड् + ल्युट् = दण्डनम्

धाव् + ल्युट् = धावनम्

रक्ष् + ल्युट् = रक्षणम्

ग्रह + ल्युट् = ग्रहणम्

सेव् + ल्युट् = सेवनम्

कथ् + ल्युट् कथनम्

भ्रम् + ल्युट् = भ्रमणम्

अद् + ल्युट् = अदनम्

आस् + ल्युट् = आसनम्

आचर्+ल्युट् = आचरणम्

जन् + ल्युट् = जननम्

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

(11) "क्त्वा प्रत्यय"

क्त्वा = अव्यय

- क्त्वा प्रत्यय में 'त्वा' शेष रहता है। क् की 'लशक्वतद्धिते' से इत् संज्ञा और अनुबन्ध लोप हुआ। इसका प्रयोग कर करके अर्थ में होता है।
- एक क्रिया जहाँ समाप्त होती है उसके बाद दूसरी क्रिया शुरू होती है तो पूर्व की क्रिया पूर्वकालिक कहलाती है और बाद की क्रिया उत्तरकालिक कहलाती है।
- पूर्वकालिक क्रिया भूतकाल की होती है और इसमें क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है।

सूत्र :

समानकर्तृकयोः पूर्वकाले :

समान कर्ता वाले धात्वर्थों में पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है, कर्ता यदि दो क्रियाएँ एक साथ करता हो, जो क्रिया पहले हो रही हो उस क्रिया वाचक धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय में उपसर्ग नहीं लगता है। इससे बना शब्द अव्यय होता है।

- रामः भुक्त्वा पीत्वा च गच्छति ।

• अलं खल्वो: प्रतिषेधयो: प्राचां क्त्वा :

प्रतिषेधात्मक अलं और खलु उपपद होने पर धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। यह प्राचीन विद्वानों का मत है।

प्राचां पद आदर के लिए आया है।

अलं पीत्वा-

मत पीओ। अलं + पा + क्त्वा

यहाँ निषेधार्थक अलं पद उप पद (पहले) है, इसलिए पा धातु से क्त्वा प्रत्यय हुआ है। अलं दत्वा, अलं कृत्वा, खलु पीत्वा

क्त्वा प्रत्यय जोड़ने के नियम :

जिस धातु के अन्त में आ लगा हुआ हो वहाँ धातु के बाद सीधे त्वा जुड़ जाता है।

घ्रा + क्त्वा = घ्रात्वा

ज्ञा + क्त्वा = ज्ञात्वा

स्ना + क्त्वा = स्नात्वा

क्त्वा = पीत्वा

दा + क्त्वा = दत्त्वा - दा का (दद्) आदेश हो जाता है। 'खरिच' से द् का त् हो जाता है।

दधातेर्हि :

इस सूत्र से धा के स्थान पर हि का आदेश हो जाता है। हि त्वा = हित्वा (धारण करके)

- **जहोतेश्च क्त्व :**

इस सूत्र से हा धातु के स्थान पर हि का आदेश हो जाता है। हा + क्त्वा = हित्वा

• नियम : जिस धातु के अन्त में इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तो सीधे त्वा जुड़ जाता है।

कृ + क्त्वा = कृत्वा

चि + क्त्वा = चित्वा

श्रु + क्त्वा = श्रुत्वा

क्री + क्त्वा = क्रीत्वा

स्मृ + क्त्वा = स्मृत्वा

हृ + क्त्वा = हृत्वा

जि+ क्त्वा = जित्वा

नी + क्त्वा = नीत्वा

अस् क्त्वा भूत्वा

धृ + क्त्वा = धृत्वा

स्तु + क्त्वा = स्तुत्वा

• नियम : जिस धातु के अन्त में म् और न् हो तो उसका लोप हो जाता है।

गम् + क्त्वा = गत्वा

नम् + क्त्वा = नत्वा

हन् + क्त्वा = हत्वा

मन् + क्त्वा = मत्वा

शम् + क्त्वा = शान्त्वा

• नियम :

• जिस धातु की उपधा में इ, उ हो तो वहाँ बीच में 'इट्' का आगम होता है।

• दूसरे रूप में इ, उ का गुण भी हो जाता है।

लिख् + क्त्वा = लिखित्वा

इ+ ए = लेखित्वार

द्युत + क्त्वा = द्युतित्वा, द्योतित्वा

कुप् + क्त्वा = कुपित्वा, कोपित्वा

लुभ् + क्त्वा = लुभित्वा, लोभित्वा

सिव् + क्त्वा = सिवित्वा, सेवित्वा

इष् + क्त्वा = इष्ट्वा, एषित्वा

नियम : वस्, वद्, वच्, वह, ब्रू जिस धातु के शुरू में व हो, तो व के स्थान पर उ हो जाता है।

इग्यण: सम्प्रसारणम् :

जहाँ यण् के स्थान पर इक् का आगम होता है तो वहाँ सम्प्रसारण संज्ञा होती है।

वस् + क्त्वा = व काउ

उष् + इ + क्त्वा = उषित्वा

उद् + क्त्वा = उदित्वा

वच् + क्त्वा = उक्त्वा

शी + क्त्वा = शयित्वा

पठ् + क्त्वा = पठित्वा

अर्च् + क्त्वा = अर्चित्वा

क्रीड् + क्त्वा = क्रीडित्वा

क्रन्द + क्त्वा = क्रन्दित्वा

चर् + क्त्वा = चरित्वा

चल् + क्त्वा = चलित्वा

जप् + क्त्वा = जपित्वा

जीव् + क्त्वा = जीवित्वा

खाद् + क्त्वा = खादित्वा

भाष् + क्त्वा = भाषित्वा

उस् + क्त्वा = इट् का आगम

वद् + क्त्वा = उक्त्वा

ब्रू + क्त्वा = उक्त्वा

वह् + क्त्वा = ऊढ्वा

सेव + क्त्वा = सेवित्वा

हस् + क्त्वा = हसित्वा

ईक्ष् + क्त्वा = ईक्षित्वा

ग्रह + क्त्वा = ग्रहीत्वा

- पत् + क्त्वा = पतित्वा

भम् + क्त्वा = भ्रमित्वा

मन्थ् + क्त्वा = मथित्वा

मिल् + क्त्वा = मिलित्वा

रक्ष + क्त्वा = रक्षित्वा

विज् + क्त्वा = विजित्वा

नियम : कथ् आदि धातुओं में 'य' से पहले 'इ' की मात्रा जुड़ जाती है।

कथ् + क्त्वा = कथयित्वा

चिन्त् + क्त्वा = चिन्तयित्वा

मंत्र + क्त्वा = मंत्रयित्वा

दह् + क्त्वा = दग्ध्वा

मुच् + क्त्वा = मुक्त्वा

तप् + क्त्वा = तप्त्वा

श्रि + क्त्वा = श्रित्वा

क्रम + क्त्वा = क्रान्त्वा

शास् + क्त्वा = शिष्ट्वा

पूज + क्त्वा = पूजयित्वा

चुर् + क्त्वा चोरयित्वा

सिच् + क्त्वा = सिक्त्वा

रूह + क्त्वा = रुवा

रुध् + क्त्वा = रुद्ध्वा

सृज् + क्त्वा = सृष्ट्वा

क्रुध् + क्त्वा = क्रुद्ध्वा

मृज्+क्त्वा = मृष्ट्वा/मार्जित्वा

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

लष्, मृष्, कृष्, ऋत् इन धातुओं से विकल्प से गुण होता है और इट् का आगम होता है।

लष् + क्त्वा = लषित्वा

मृष् + क्त्वा = मृषित्वा, मर्षित्वा

कृष् + क्त्वा = कृषित्वा, कर्षित्वा

ऋत् + क्त्वा = ऋतित्वा, आर्तित्वा

रञ्जु + क्त्वा = रक्त्वा, रङ्क्त्वा

भुज् + क्त्वा = भुक्त्वा, भुङ्क्त्वा

12 Pm - 3 Pm
5, 6, 7 X

8 फरवरी 1 PM
REET
10, 11, 12, 13, 14, 15